

* लिंग *

अर्थ होता है : — पहचान

* लिंग के भेद : — हिन्दी व्याकरण में दो प्रकार के होते।

(1) स्त्रीलिंग : — स्त्री वर्ग का बोध करवाए।

(2) पुल्लिंग : — पुरुष वर्ग का " " "

पहचानने की तकनीक : — अच्छा/अच्छी, मेरा/मेरी

उस शब्द के पहले लगाकर प्रयोग करें।

अपवाद : — सिंधु/ब्रह्मपुत्र/सोन नदी (पुल्लिंग) हैं।

दोनों लिंग में प्रयोग : — देश/मित्र/सच्चापसंती/शत्रु/
कपड़ा/पानी/आत्मा।

Changes : —

कवि — कवयित्री

विद्वान — विदुषी

नेता — नेत्री

महान — महती

साधु — साध्वी

लेखक — लेखिका

* वचन (Numbers) *

* वचन हिन्दी में दो प्रकार के होते हैं -

(1) एकवचन — लड़का

(2) बहुवचन — लड़के

* कुछ ^{शब्द} सदैव बहुवचन में ही प्रयुक्त होते हैं।

(1) आँसू

(5) रौम

(2) केश

(6) होश

(3) समाचार

(7) प्राण

(4) सजा

(8) दर्शन

(9) हस्ताक्षर

(10) लोग

* कुछ शब्द हमेशा एकवचन में ही रहते हैं।

Ex — जनता, माल, सोना, धूँगा, प्यार - -

Note = व्यक्तिवाचक, प्रत्ययवाचक, भाववाचक संज्ञा हमेशा एकवचन में रहती हैं।

* “आपस/सम्मान” के लिए बहुवचन का प्रयोग होता है।

Ex — पिताजी आ रहे हैं।

तुलसी श्रेष्ठ कवि थे।

Note = अनेकों (X) अनेक (✓)

→ यह संबंध में बहुवचन होता है।

Ex — बाग में अनेक वृक्ष थे।

वहाँ अनेक लोग हैं।

* कारक (विभक्ति) *

* जो शब्द कर्ता, क्रिया, कर्म से सम्बंध जोड़ते हैं, उसे कारक कहते हैं।

* हिन्दी में कारकों की संख्या — 8

कारक	चिन्ह
1. कर्ता	→ ने
2. कर्म	→ को
3. करण	→ से (के द्वारा)
4. सम्प्रदान	→ के लिए, को
5. अपादान	→ से (अलग होने के अर्थ में)
6. सम्बंध	→ का, की, के, ना, नी ने
7. अधिकरण	→ में, पे, पर
8. सम्बोधन	→ हे, ओ, अरे

कर्ता कारक :- जिस रूप से क्रिया के करने का बोध हो।

Ex — लड़की स्कूल जाती है।

* "ने" चिन्ह का प्रयोग वर्तमानकाल/भविष्यकाल वाक्यों में न होकर केवल भूतकाल में होता है।

Ex — राम ने खण को मारा।

↳ लेकिन भूतकाल यदि अकर्मक क्रिया में है तो वहाँ भी "ने" चिन्ह नहीं लगाते। Ex — वह हँसा।

पहचान :- कौन का प्रश्न निकलता है।

कर्म कारक : — किया के कार्य का फल जिस पर पड़े ।

प्रश्न : क्या/ किसको प्र. निकलता है।

Ex - सीमा ने तनीषा को पीटा।
 (डिलकाँ)

करण कारक : - जिसके द्वारा क्रिया पूरी की जाती है। उस संज्ञा (साधन) को करण कारक कहते हैं।

Ex - स्नेहा लेखनी से लिखती है।

सम्प्रदान कारक :- जिसके लिए कोई क्रिया की जाए।

Ex - बैच्चों को गेद लाउगो ।

સુરભિ માં ઉ ત્રિલ મિઠાઈ લાઈ ।

अपादान :- संज्ञा/सर्वनाम से वस्तु का अलग होना पाया जाय।

Ex - वृक्ष से पत्ता गिरा

सम्बंध :- रंझा / सर्वनाम के जिस रूप से उसका दूसरे शब्दों के साथ सम्बंध हाकत हो ।

Ex - मेरी छाड़ी लो गई ।

अधिकरण :- संज्ञा के जिन रूप से क्रिया के अन्धकार का बोध हो ।

Ex - મેબ પર પુસ્તક રચી ।

सम्बोधन :- किसी को पुकारने का बोध हो -

Ex - हे प्रभु ! वृषा ङ उरो ।

* वाक्य (Sentence) *

* सार्थक शब्दों का व्यवस्थित समूह जिससे अपेक्षित अर्थ प्रकट हो, वाक्य कहते हैं।

* वाक्य के ^{अनिवार्यत्व} अंग हैं - 6 (सार्थकता, योग्यता, आंशिकता, निरुद्धता, पदक्रम, अन्वय)

* वाक्य के अंग हैं - 2 (उद्देश्य, विधेय)

Ex = अनुराग खेलता है।
 ↓ ↓
 उद्देश्य विधेय

* जिसके बारे में कुछ बताया जाए - उद्देश्य

* वाक्य के उद्देश्य के बारे में जो कहा जाए - विधेय

* वाक्य के मंदः - दो स्वर से होता है।

- (1) अर्थ के आधार पर,
- (2) रचना के

(1) अर्थ के आधार पर : - 8 प्रकार के।

- (i) विधानवाचक (वर्षा हो रही है)
- (ii) निषेधवाचक (मैंने बना नहीं खाया)
- (iii) आज्ञावाचक (बाजार जाकर फल लाओ)
- (iv) प्रश्नवाचक (यह क्या है)
- (v) सूचनावाचक (तुम्हारा कल्याण हो)
- (vi) संदेहवाचक (शायद शाम को बरसि हों)
- (vii) विस्मयवाचक (शाबाश! अच्छा काम किया) हो जाओगी
- (viii) संकेतवाचक (यदि तुम मेहनत करेंगे तो पास ~~होगे~~)

(2) स्वना के आधार पर : — 3 प्रकार के होते।

i) सरल/साधारण वाक्य : — 1 उद्देश्य + 1 विधेय होता।

Ex — वह खाना खाता है।
उ० वि०

ii) संयुक्त वाक्य : — दो या दो से अधिक सरल वाक्यों को जोड़कों (और, एवं, तथा, या, अथवा, इसलिए, अतः, फिर भी, तो, नहीं तो, किन्तु, परन्तु, लेकिन, पर) से जुड़े होते। (सरल वाक्य + सरल वाक्य)

Ex — वह सुबह गया और शाम को लौट आया।

iii) मिश्रित वाक्य : — जिन वाक्यों में एक प्रधान (मुख्य) उपवाक्य हो और अन्य आश्रित (गौण)

उपवाक्य हों तथा जो आपस में 'कि', 'जो', 'क्योंकि', 'जितना — उतना', 'जैसा — वैसा', 'जब — तब', 'जहाँ — वहाँ', 'जिधर — उधर', 'अगर/यदि — तो', 'यद्यपि — तथापि', जुड़े हों मिश्रित वाक्य कहते।

↳ (प्रधान उपवाक्य + आश्रित उपवाक्य)

Ex — मैं जानता हूँ कि तुम्हारे अक्षर अच्छे नहीं बनते।

* विराम चिन्ह *

अर्थ = रुकना / ठहरना

* हिंदी में प्रयुक्त विराम चिन्ह हैं - 18

(1) पूर्ण विराम — (.)

= वह खाता है (।)

(2) अर्धविराम — (;) — अल्पविराम की अपेक्षा अधिक देर रुकना

= एम.ए.; बी.ए.।

(3) अल्पविराम — (,) अर्धविराम की तुलना में कम रुकना

= हाँ, लिख सकता हूँ।

(4) प्रश्नवाचक — (?)

= वहाँ क्या रखा है ?

(5) विस्मयादिबोधक — (!)

= वाह! हाय!

(6) उद्धरण चिन्ह — (" ")

(7) योजक चिन्ह — (-) = पाप-पुण्य, सुख-दुख

(8) निर्देशक " — (—) = संवाद, सूची में नाम लिखने के लिए प्रयोग

Ex — रमेश — तुम कहाँ रहते हो ?

(9) कोष्ठक — {[()]}

(10) हंसपद/सुट्टिबोधक — ^ = स्वतंत्रता हमारा ^ अधिभार है।

(11) रेखांकन चिन्ह — (—)
(Underline)

(12) लाघव चिन्ह — (0) संक्षिप्त रूप = म०, पृ०

(13) लोप चिन्ह — (.....) = परीक्षा आ गई।

(14) अपूर्ण विराम — (∴)

(15) पुनरुक्ति सूचक — (” ”)

(16) विवरण चिन्ह — (∴—)

(17) तारक ” — ☆ = पाद टिप्पणी के लिए

(18) योग ” — (+ +)

(19) तुल्यता सूचक — (=)

(20) त्रियुति रेखा — (/) = अथवा, या में

(21) समाप्ति सूचक — (- ० -, ***, □□□)

(22) अवतरण चिन्ह — (‘ ’)